DSSSB TGT & PGT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
यजुर्वेद (शिवसंकल्प सूक्त)
एवं अव्यय
LIVE
30-08-2024 05:00 PM

यजुर्वेद (शिवसंकल्प सूक्त) एवं अव्यय

13. शिवसकल्प सूक्त (अध्याय-34)

शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिनवाजसनेयिसंहिता

अध्याय-34 कण्डिका 1-6 कुल मन्त्र-06. ऋषि-याज्ञवल्क्य,

देवता-मनस्, छन्द-त्रिष्टुप्

Sat - 2PM
Sun - 8AM

1. यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति ।
दूरङ्ङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥

अर्थ- जो मन पुरुष की जाग्रतावस्था में अधिक दूर चला जाता है, जो एकमात्र आत्मा का दर्शन करने वाला है; जो पुरुष की सुषुप्तावस्था में उसी प्रकार लौट आता है (तथा) जो समस्त बाह्य इन्द्रियों का एकमात्र प्रकाशक है; वह मेरा मन शुभ सङ्कल्प वाला होवे।

2. येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यदपूर्व यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥

अर्थ- जिस मन में कर्मनिष्ठ बुद्धिमान् पुरुष यज्ञ में तथा उपासनाओं में कर्म करते हैं, जो सब (इन्द्रियों) से पहले उत्पन्न होता है, और यज्ञ करने में समर्थ है, तथा जो प्राणिमात्र के शरीर के भीतर रहता है, वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला होवे।

3. यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु ।
यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥

अर्थ- जो मन विशेषज्ञान तथा सामान्यज्ञान (का साधन) है, जो धैर्य रूप है, जो प्राणियों के भीतर (इन्द्रियों की प्रेरक) अमर ज्योति है तथा जिसके बिना कोई भी काम नहीं किया जा सकता, वह मेरा मन शुभ सङ्कल्प वाला होवे।

4. येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।

अर्थ- जिस अमर मन के द्वारा इस संसार में भूत, भविष्यत् और वर्तमानकाल के सब पदार्थ जाने जाते हैं, और जिसके द्वारा सात होता वाला (अग्निष्टोम) यज्ञ किया जाता है, वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला होवे।

5. यस्मिन्नृचः साम यजूंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिँश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥

अर्थ- रथ चक्र की नाभि में तीलियों की भाँति जिस मन में ऋचाएँ, साम और यजुः प्रतिष्ठित होते हैं, जिसमें प्राणियों का सर्वपदार्थविषयक ज्ञान निहित है, वह मेरा मन शुभसङ्कल्प वाला होवे।

6. सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥

अर्थ- जैसे अच्छा सारथी घोड़ों को इधर-उधर प्रेरित करता है और अपने वश में रखता है, उसी प्रकार जो मन प्राणियों को बार-बार इधर-उधर प्रेरित करता है और अपने वश में रखता है, जो हृदय में स्थित है, जो जरा से रहित तथा अत्यन्त वेगवान् है, वह मेरा मन शुभ संङ्कल्प वाला होवे।